

14-आद्यशक्ति गायत्री की समर्थ साधना

अध्याय 1: आद्यशक्ति गायत्री की समर्थ साधना

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री महामंत्र में कितने अक्षर हैं?

उत्तर: गायत्री महामंत्र में चौबीस अक्षर हैं।

2. प्रश्न: भारतीय संस्कृति का सारतत्त्व किसमें खोजा जा सकता है?

उत्तर: भारतीय संस्कृति का सारतत्त्व चौबीस अक्षरों वाले गायत्री महामंत्र में खोजा जा सकता है।

3. प्रश्न: भारत को प्राचीन काल में क्या-क्या कहा जाता था?

उत्तर: भारत को जगद्गुरु, चक्रवर्ती व्यवस्थापक और दिव्य सम्पदाओं का उद्गम कहा जाता था।

4. प्रश्न: मनुष्य में किस गुण के उदय होने पर भारतभूमि 'स्वर्गादपि गरीयसी' (स्वर्ग से भी महान) बन सकी?

उत्तर: मनुष्य में देवत्व के उदय होने पर भारतभूमि 'स्वर्गादपि गरीयसी' बन सकी।

5. प्रश्न: संसार का सबसे छोटा धर्मशास्त्र किसे कहा जा सकता है और क्यों?

उत्तर: गायत्री मंत्र को संसार का सबसे छोटा धर्मशास्त्र कहा जा सकता है, क्योंकि चारों वेदों का सारतत्त्व इसके चार चरणों में समाहित है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: क्या मात्र गायत्री मंत्र के अक्षरों को दोहरा लेने से उसकी विभूतियाँ प्राप्त हो सकती हैं? यदि नहीं, तो क्यों?

उत्तर: नहीं, मात्र अक्षर दोहरा लेने से गायत्री मंत्र की विभूतियाँ प्राप्त नहीं हो सकतीं। जैसे एक स्कूली बच्चा केवल वर्णमाला दोहराकर शिक्षित नहीं हो सकता, उसे आगे बढ़ना पड़ता है, उसी प्रकार गायत्री मंत्र की विशेषताओं को पाने के लिए उसके तत्त्वज्ञान को गहराई से समझना, उसे हृदयंगम करना और जीवनचर्या में शामिल करना आवश्यक है।

2. प्रश्न: संसार की अगणित विशेषताओं और सम्पदाओं का मूलभूत कारण क्या है?

उत्तर: संसार की सभी विशेषताओं, सम्पदाओं और विभूतियों का मूलभूत कारण गरिमामय व्यक्तित्व है। जब यह व्यक्तित्व उभरता है, तो मनुष्य देवत्व का अधिष्ठाता बन सकता है।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, भारतीय संस्कृति का तत्त्वदर्शन कैसे खोजा जा सकता है?

उत्तर: भारतीय संस्कृति का तत्त्वदर्शन गायत्री महामंत्र के चौबीस अक्षरों की व्याख्या-विवेचना करके सहज ही खोजा और पाया जा सकता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री मंत्र को संसार का सबसे छोटा और समग्र धर्मशास्त्र क्यों कहा गया है? इसकी तुलना हाथी के पैर से कैसे की गई है?

उत्तर: गायत्री मंत्र को सबसे छोटा धर्मशास्त्र इसलिए कहा गया है क्योंकि वेद, जो आकार में विशाल हैं, उनका सारतत्त्व गायत्री के चार चरणों में समाहित है। इसकी तुलना हाथी के पैर से इस उक्ति के माध्यम से की गई है कि "हाथी के पैर में अन्य सब प्राणियों के पदचिह्न समा जाते हैं," जिसका अर्थ है कि गायत्री मंत्र अपने संक्षिप्त रूप में ही वेदों जैसे विशाल ज्ञान को समाहित कर लेता है।

2. प्रश्न: जीवन को परिष्कृत करने के लिए गायत्री मंत्र के साथ क्या करना अनिवार्य है?

उत्तर: जीवन को परिष्कृत करने के लिए केवल मंत्र का जाप पर्याप्त नहीं है। इसके लिए गायत्री मंत्र में निहित तत्त्वज्ञान पर गहरी दृष्टि डालनी होगी, उसे हृदयंगम करना होगा और उसके नवनीत (सार) को अपनी जीवनचर्या में इस प्रकार समाविष्ट करना होगा कि मलीनता का निराकरण हो और शालीनता का अनुभव हो सके।

अध्याय 2: गायत्री और सावित्री का उद्भव

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्माजी ने तप करने के लिए किसका माध्यम अपनाया?

उत्तर: सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्माजी ने आकाशवाणी के निर्देशानुसार गायत्री के माध्यम से तप किया।

2. प्रश्न: पूर्णता की स्थिति में गायत्री कितने खण्डों में प्रकट हुई और उनके नाम क्या थे?

उत्तर: पूर्णता की स्थिति में गायत्री दो खण्डों में प्रकट हुई, जिन्हें गायत्री और सावित्री नाम दिया गया।

3. प्रश्न: गायत्री किसका प्रतीक है?

उत्तर: गायत्री तत्त्वज्ञान से संबंधित पक्ष का प्रतीक है, जिससे विचारणा, भाव-संवेदना और आस्था जैसी विभूतियों का उद्भव होता है।

4. प्रश्न: सावित्री किसका प्रतीक है?

उत्तर: सावित्री भौतिक प्रयोजनों और पदार्थ-संरचना से संबंधित पक्ष का प्रतीक है।

5. प्रश्न: भौतिक विज्ञान को किस विद्या का एक पक्ष माना गया है?

उत्तर: भौतिक विज्ञान को सावित्री विद्या का ही एक पक्ष माना गया है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री और सावित्री के समन्वय का क्या महत्व है?

उत्तर: यह संसार जड़ (प्रकृति) और चेतन (परब्रह्म) के समन्वय से ही क्रियाशील है। सावित्री जड़-सृष्टि और

भौतिक विज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि गायत्री चेतन और तत्त्वज्ञान का। दोनों को मिला देने पर ही समग्र अभ्युदय (उन्नति) संभव है, जैसे गाड़ी दो पहियों से ही चल पाती है।

2. प्रश्न: गायत्री का तत्त्वज्ञान व्यक्ति के जीवन को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर: गायत्री का तत्त्वज्ञान व्यक्ति की मान्यताओं और भावनाओं को प्रभावित करता है, जिनका स्थूल रूप चिन्तन, चरित्र और व्यवहार है। यह उत्कृष्टता, आदर्शवादिता, और कर्तव्यपरायणता जैसी मानवीय गरिमा को बनाए रखने वाली आस्थाओं को अपनाने की प्रेरणा देता है।

3. प्रश्न: पौराणिक कथा के अनुसार, ब्रह्माजी को गायत्री तप की प्रेरणा कहाँ से और क्यों मिली?

उत्तर: जब ब्रह्माजी कमल पुष्प पर अकेले अवतरित हुए, तो वे असमंजस में थे कि उन्हें क्यों उत्पन्न किया गया है और वे क्या करें। उनकी इन जिज्ञासाओं का समाधान एक आकाशवाणी ने किया, जिसने उन्हें गायत्री के माध्यम से तप करने को कहा ताकि आवश्यक मार्गदर्शन भीतर से ही उभर सके।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "पूर्णता के लिए दो हाथ, दो पैर आवश्यक हैं।" इस कथन के माध्यम से लेखक गायत्री-दर्शन के किस सिद्धांत को समझाना चाहते हैं?

उत्तर: इस कथन के माध्यम से लेखक यह समझाना चाहते हैं कि समग्र उन्नति के लिए गायत्री (तत्त्वज्ञान) और सावित्री (भौतिक विज्ञान) दोनों का समन्वय आवश्यक है। जिस प्रकार शरीर के लिए दो हाथ-पैर या गाड़ी के लिए दो पहिए जरूरी हैं, उसी प्रकार आत्मिक और भौतिक, दोनों पक्षों को समझे और अपनाए बिना गायत्री महाशक्ति का समग्र लाभ प्राप्त नहीं किया जा सकता।

2. प्रश्न: गायत्री-दर्शन में "सामूहिक सद्बुद्धि" को प्रमुखता क्यों दी गई है? इसका व्यक्ति और समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: गायत्री-दर्शन में सामूहिक सद्बुद्धि को प्रमुखता दी गई है क्योंकि इसी आधार को अपनाकर मनुष्य मेधावी और प्राणवान बनता है। यह दर्शन केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानता है कि जब पूरे समूह, समाज और संसार में सद्बुद्धि की प्रेरणा उभरती है तभी वास्तविक प्रगति होती है। यह व्यक्ति को उत्कृष्टता अपनाने के लिए प्रेरित करता है, जिससे उसका चिन्तन, चरित्र और व्यवहार परिष्कृत होता है।

अध्याय 3: त्रिपदा गायत्री—तीन धाराओं का संगम

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री को त्रिपदा क्यों कहा गया है?

उत्तर: गायत्री को त्रिपदा इसलिए कहा गया है क्योंकि इसके तीन चरण हैं और इससे तीन दिशाधाराएँ जुड़ती हैं।

2. प्रश्न: गायत्री का पहला चरण क्या है और इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: गायत्री का पहला चरण है "सविता के भर्ग—तेजस् का वरण," जिसका अर्थ है जीवन में ऊर्जा, आभा, परिष्कृत प्रतिभा और शौर्य-साहस को धारण करना।

3. प्रश्न: गायत्री का दूसरा चरण "देवस्य धीमहि" क्या सिखाता है?

उत्तर: दूसरा चरण "देवस्य धीमहि" देवत्व का वरण करना सिखाता है, जिसका अर्थ है शालीनता अपनाना, उदार बनना और लेने की अपेक्षा देने की प्रवृत्ति को बढ़ाना।

4. प्रश्न: गायत्री का तीसरा चरण "धियो यो नः प्रचोदयात्" किस बात की प्रेरणा देता है?

उत्तर: तीसरा चरण "धियो यो नः प्रचोदयात्" केवल अपनी ही नहीं, बल्कि सारे समाज व संसार में सद्बुद्धि की प्रेरणा उभारने की बात कहता है।

5. प्रश्न: आध्यात्मिक त्रिवेणी-संगम में कौन-सी तीन धाराएँ मिलती हैं?

उत्तर: आध्यात्मिक त्रिवेणी-संगम में तीन धाराएँ मिलती हैं: आदर्शवादी साहसिकता, देवत्व की पक्षधर शालीनता, और आदर्शवादिता को प्रमुखता देने वाली महाप्रज्ञा।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री के तत्त्वज्ञान को समझने और स्वीकारने वाले व्यक्ति में कौन-सी तीन प्रमुख विशेषताएँ होनी चाहिए?

उत्तर: गायत्री के तत्त्वज्ञान को समझने वाले व्यक्ति में तीन विशेषताएँ होनी चाहिए: (1) प्रखर प्रतिभा और साहस जो अनीति के आगे न झुके, (2) देवत्व और शालीनता जो उसे उदार बनाए, और (3) सामूहिक सद्बुद्धि की प्रेरणा जो उसे संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊपर उठाए।

2. प्रश्न: गायत्री के चौबीस अक्षरों में किन-किन विषयों पर प्रकाश डाला गया है?

उत्तर: गायत्री के चौबीस अक्षरों में नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक, भौतिक, आत्मिक, दार्शनिक और व्यावहारिक जैसे सभी विषयों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है, जिनके सहारे संकटों से उबरकर सुख-शांति का मार्ग पाया जा सकता है।

3. प्रश्न: भगवान कृष्ण ने गीता में गायत्री के विषय में क्या कहा है?

उत्तर: भगवान कृष्ण ने गीता के विभूति योग में कहा है— "गायत्री छन्दसामहम्", अर्थात् "छन्दों में गायत्री मैं स्वयं हूँ"।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "कौए से कोयल एवं बगुले से हँस बन जाने की उपमा" किस संदर्भ में दी गई है और इसका वास्तविक अर्थ क्या है?

उत्तर: यह उपमा त्रिवेणी संगम (गायत्री के तीन चरण) में स्नान करने के संदर्भ में दी गई है। इसका वास्तविक अर्थ है कि जो व्यक्ति गायत्री के तत्त्वज्ञान को जीवन में उतारता है, उसका चरित्र पूरी तरह बदल जाता है। जैसे कौआ कर्कश और बगुला धूर्त माना जाता है, वैसे अवगुणों वाला व्यक्ति भी कोयल जैसा मधुर और हंस जैसा विवेकशील बन जाता है। यह परिवर्तन गायत्री की तीन धाराओं—साहसिकता, शालीनता और महाप्रज्ञा—को अपनाने से आता है।

2. प्रश्न: गायत्री का तत्त्वज्ञान संकीर्ण स्वार्थपरता को कैसे समाप्त करता है?

उत्तर: गायत्री का तीसरा चरण "धियो यो नः प्रचोदयात्" केवल अपनी नहीं, बल्कि "सबकी" बुद्धि को सन्मार्ग पर लाने की प्रार्थना है। यह सामूहिक कल्याण की भावना व्यक्ति को संकीर्णता और कृपणता से ऊपर उठाती है। जब व्यक्ति केवल अपने लाभ के बारे में न सोचकर पूरे समाज की भलाई के बारे में सोचने लगता है, तो वह दूसरों के अधिकारों का हनन करके अनुचित लाभ बटोरने जैसी स्वार्थपरता से मुक्त हो जाता है।

अध्याय 4: शक्ति-केन्द्रों का उद्दीपन—शब्द शक्ति द्वारा

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री मंत्र के अक्षर शरीर और मन पर कैसा प्रभाव डालते हैं?

उत्तर: गायत्री मंत्र के अक्षर शरीर और मन के मर्मकेन्द्रों पर ऐसा प्रभाव डालते हैं जिससे कठिनाइयों का निराकरण होता है और सुविधाओं का विकास होता है।

2. प्रश्न: लेखक ने मंत्र के प्रभाव की तुलना किस यंत्र से की है?

उत्तर: लेखक ने मंत्र के प्रभाव की तुलना टाइपराइटर से की है, जहाँ एक जगह कुंजी दबाने पर दूसरी जगह अक्षर छप जाता है।

3. प्रश्न: गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों का संबंध शरीर के किन सूक्ष्म केन्द्रों से है?

उत्तर: गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों का संबंध सूक्ष्म-शरीर के विभिन्न शक्ति-केन्द्रों, जैसे षट्चक्रों, पञ्चकोशों और चौबीस ग्रन्थियों से है।

4. प्रश्न: मंत्र का उच्चारण शरीर में क्या प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है?

उत्तर: मंत्र के उच्चारण से मुख, तालु, होंठ आदि पर पड़ने वाले दबाव से शरीर के दिव्य शक्ति-केन्द्र वीणा के तारों की तरह झंकृत हो उठते हैं और एक विशेष स्वरलहरी उत्पन्न करते हैं।

5. प्रश्न: इन शक्ति-केन्द्रों के जागृत होने पर साधक को क्या लाभ होता है?

उत्तर: इन शक्ति-केन्द्रों के जागृत होने पर साधक उन विशेषताओं और विभूतियों से सम्पन्न हो जाता है, जो उन केन्द्रों में निहित होती हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री मंत्र के उच्चारण की प्रक्रिया को "टेलेक्स" या "रेडियो-प्रसारण" जैसा क्यों कहा गया है?

उत्तर: इसे टेलेक्स या रेडियो-प्रसारण जैसा इसलिए कहा गया है क्योंकि जैसे रेडियो से निकली तरंगें विशेष रिसीवर तक पहुँचती हैं, उसी प्रकार मंत्र उच्चारण से उत्पन्न शक्तिधाराएँ वैसे तो सब ओर फैलती हैं, पर विशेष रूप से उन शक्ति-केन्द्रों को स्पर्श और जागृत करती हैं, जो मंत्र के अक्षरों से जुड़े होते हैं।

2. प्रश्न: योगशास्त्रों में वर्णित सूक्ष्म शक्ति-केन्द्रों (षट्चक्र, पञ्चकोश) को गायत्री मंत्र कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर: गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों में से प्रत्येक अक्षर का संबंध एक-एक शक्ति-केंद्र से है। जब मंत्र का उच्चारण होता है, तो मुख के विभिन्न हिस्सों पर दबाव पड़ता है, जिससे ये केंद्र उत्तेजित होते हैं। यह उत्तेजना उन केंद्रों को जागृत करती है, जिससे साधक को उनमें निहित विशेष शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

3. प्रश्न: "शब्द शक्ति" द्वारा शक्ति-केन्द्रों के उद्दीपन का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इसका तात्पर्य है कि गायत्री मंत्र केवल अर्थपूर्ण शब्दों का समूह नहीं है, बल्कि इसके प्रत्येक अक्षर के उच्चारण में एक विशेष ध्वनि-ऊर्जा (शब्द शक्ति) है। यह ध्वनि-ऊर्जा शरीर के भीतर स्थित सूक्ष्म ऊर्जा केंद्रों (शक्ति-केन्द्रों) पर कंपन पैदा करती है, जिससे वे सक्रिय या "उद्दीप्त" हो जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे सितार के तारों को छेड़ने पर संगीत उत्पन्न होता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री मंत्र के प्रभाव को वैज्ञानिक और आध्यात्मिक, दोनों दृष्टिकोणों से कैसे समझा जा सकता है?

उत्तर: वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, मंत्र के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनि-कंपन (vibrations) शरीर के तंत्रिका तंत्र (nervous system) और अंतःस्रावी ग्रंथियों (endocrine glands) पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं, जिससे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, ये कंपन सूक्ष्म-शरीर में स्थित चौबीस दिव्य ग्रंथियों या शक्ति-केंद्रों को जागृत करते हैं, जिससे साधक को अतींद्रिय क्षमताओं और विशेष विभूतियों की प्राप्ति होती है।

2. प्रश्न: यदि गायत्री मंत्र का उच्चारण सही विधि से न किया जाए, तो क्या शक्ति-केंद्रों का उद्दीपन संभव है? क्यों?

उत्तर: स्रोतों में सीधे तौर पर इसका उल्लेख नहीं है, लेकिन दिए गए सिद्धांतों के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सही विधि से उच्चारण आवश्यक है। लेखक ने बताया है कि मंत्र का उच्चारण मुख, तालु, होंठ आदि पर विशेष दबाव डालता है, जिससे संबंधित केंद्र झंकृत होते हैं। यदि उच्चारण गलत होगा, तो सही स्थानों पर सही दबाव नहीं पड़ेगा, और शक्ति-केंद्रों का उचित उद्दीपन संभव नहीं होगा, ठीक वैसे ही जैसे टाइपराइटर पर गलत कुंजी दबाने से सही अक्षर नहीं छपता।

अध्याय 5: शरीर की विभिन्न देव-शक्तियों का जागरण

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: मनुष्य शरीर को किसकी उपमा दी गई है?

उत्तर: मनुष्य शरीर को एक दिव्य मंदिर की उपमा दी गई है, जिसमें विभिन्न स्थानों पर विभिन्न देवताओं की स्थिति मानी गई है।

2. प्रश्न: शरीर में स्थित देवता सामान्यतः किस अवस्था में रहते हैं?

उत्तर: शरीर में स्थित देवता सामान्यतः प्रसुप्त (सोई हुई) स्थिति में रहते हैं।

3. प्रश्न: सोते हुए सिंह या सर्प का उदाहरण किसलिए दिया गया है?

उत्तर: यह उदाहरण यह समझाने के लिए दिया गया है कि जैसे सोते हुए सिंह या सर्प निर्जीव लगते हैं पर जागने पर अपना पूरा पराक्रम दिखाते हैं, उसी प्रकार शरीर की सोई हुई देव-शक्तियाँ मंत्र-साधना से जागृत होने पर अपना प्रभाव दिखाती हैं।

4. प्रश्न: गायत्री मंत्र के तीन चरणों से व्यक्ति में कौन-से गुण उभरते हैं?

उत्तर: पहले चरण से सूर्य जैसी तेजस्विता और ऊर्जा, दूसरे चरण से देवत्व (शालीनता, सज्जनता) और तीसरे चरण से सामुदायिक सद्वुद्धि का गुण उभरता है।

5. प्रश्न: ओजस्, तेजस् और वर्चस् किन्हें कहते हैं?

उत्तर: ये तीनों गायत्री साधना से प्राप्त होने वाली सिद्धियाँ हैं। ओजस् (शारीरिक बलिष्ठता), तेजस् (मानसिक प्रखरता) और वर्चस् (आत्मिक दिव्यता) को ही ओजस्, तेजस्, वर्चस् कहते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: उपासना के साथ जीवनसाधना को जोड़ना क्यों अनिवार्य है?

उत्तर: उपासना और जीवनसाधना (उत्कृष्ट व्यक्तित्व) एक दूसरे के पूरक हैं। जैसे बिजली के दोनों तार मिलने पर ही करंट चालू होता है, उसी प्रकार केवल कर्मकांड करने से लाभ नहीं होता। जब स्वच्छ और परिष्कृत व्यक्तित्व (जीवनसाधना) के साथ उपासना की जाती है, तभी साधना से सिद्धि की आशा की जा सकती है। धिनौने और कुकर्मी व्यक्ति की पूजा-पाठ का कोई फल नहीं मिलता।

2. प्रश्न: "अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता" इस कहावत का प्रयोग लेखक ने किस संदर्भ में किया है?

उत्तर: इस कहावत का प्रयोग लेखक ने गायत्री के तीसरे चरण (सामुदायिक सद्वुद्धि) के महत्व को समझाने के लिए किया है। इसका अर्थ है कि केवल व्यक्तिगत उन्नति पर्याप्त नहीं है। समाज की प्रगति के लिए सामूहिकता और सामाजिकता को महत्व देना आवश्यक है, क्योंकि दुर्बुद्धि ही दुष्टता और दुर्गति का कारण बनती है।

3. प्रश्न: त्रिपदा गायत्री के तीन चरण शब्द-गठन के अलावा और किस अनुशासन का निर्देश देते हैं?

उत्तर: शब्द-गठन के अलावा, त्रिपदा गायत्री यह अनुशासन भी सिखाती है कि उपासना रूपी वृक्ष को फलित होने की स्थिति तक पहुँचाने के लिए धर्म-धारणा और सेवा-साधना रूपी खाद-पानी भी निरंतर देते रहना चाहिए।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "पूजा उन्हीं की सफल होती है, जो व्यक्तित्व और प्रतिभा को परिष्कृत करने में तत्पर रहते हैं।" इस कथन की विस्तार से व्याख्या करें।

उत्तर: इस कथन का आशय है कि आध्यात्मिक सफलता का आधार नैतिक और चारित्रिक शुद्धता है। केवल पूजा-पाठ या कर्मकांड करना पर्याप्त नहीं है। साधना एक बीज की तरह है, जिसे फलने-फूलने के लिए एक उपजाऊ भूमि (परिष्कृत व्यक्तित्व) की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति अपने गुण, कर्म, स्वभाव को उत्कृष्ट बनाने का निरंतर प्रयास करता है और सेवा-साधना में लगा रहता है, उसी की उपासना सफल होती है। इसके बिना की गई पूजा निष्फल हो जाती है, जिससे लोग आध्यात्मिकता को ही व्यर्थ समझने लगते हैं।

2. प्रश्न: लोग उपासना और आध्यात्मिकता को व्यर्थ क्यों बताने लगते हैं? इसके पीछे का मूल कारण क्या है?

उत्तर: जब लोग एकांगी प्रयोग करते हैं, यानी वे केवल उपासना (कर्मकांड) पर ध्यान देते हैं और जीवन-साधना (व्यक्तित्व का परिष्कार) की उपेक्षा करते हैं, तो उनके प्रयोग निष्फल रहते हैं। धिनौने, पिछड़े और कुकर्मी व्यक्ति जब पूजा-पाठ करते हैं, तो उसका कोई सकारात्मक परिणाम नहीं दिखता। ऐसे निष्फल परिणामों के कारण वे निराश होकर समूची उपासना और आध्यात्मिकता को ही व्यर्थ बताने लगते हैं। मूल कारण दर्शन और प्रक्रिया (ज्ञान और कर्म) को अलग-अलग समझना है, जबकि दोनों के मिलने से ही सफलता मिलती है।

अध्याय 6: यज्ञोपवीत के रूप में गायत्री की अवधारणा

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: उपनयन संस्कार को और क्या कहा जाता है?

उत्तर: उपनयन संस्कार को द्विजत्व की दीक्षा भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है मानवीय गरिमा के अनुरूप जीवन को परिष्कृत करना।

2. प्रश्न: यज्ञोपवीत (जनेऊ) में कितने धागे होते हैं?

उत्तर: यज्ञोपवीत में नौ धागे होते हैं।

3. प्रश्न: ये नौ धागे किसका प्रतीक हैं?

उत्तर: ये नौ धागे नौ मानवीय विशिष्टताओं को उभारने वाले सद्गुणों का प्रतीक हैं।

4. प्रश्न: व्यवहार में लाए जाने वाले पाँच गुण (पञ्चशील) कौन-कौन से हैं?

उत्तर: ये पाँच गुण हैं: श्रमशीलता, शिष्टता, मितव्ययिता, सुव्यवस्था और उदार सहकारिता।

5. प्रश्न: भाव-श्रद्धा से संबंधित चार गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तर: ये चार गुण हैं: समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: यज्ञोपवीत धारण करने का वास्तविक तात्पर्य क्या है?

उत्तर: यज्ञोपवीत धारण करने का वास्तविक तात्पर्य केवल धागे पहनना नहीं है, बल्कि जीवनचर्या को देव मंदिर बनाना है। इसका गहरा अर्थ है कि हम उन नौ सद्गुणों (जैसे श्रमशीलता, शिष्टता, ईमानदारी आदि) से जुड़े उत्तरदायित्वों को अपने कंधे पर धारण कर रहे हैं और उन्हें जीवन में अपनाने का संकल्प ले रहे हैं।

2. प्रश्न: "सादा जीवन—उच्च विचार" की अवधारणा किस सद्गुण से जुड़ी है और इसका पालन कैसे किया जा सकता है?

उत्तर: "सादा जीवन—उच्च विचार" की अवधारणा 'मितव्ययिता' सद्गुण से जुड़ी है। इसका पालन अमीरी के अहंकारी प्रदर्शन, फिजूलखर्ची, और रूढ़ियों-कुरीतियों से जुड़े अपव्यय से बचकर किया जा सकता है। सादगी अपनाने का अर्थ है फैशन और कीमती जेवरों के दिखावे से दूर रहना।

3. प्रश्न: "बहादुरी" नामक सद्गुण का क्या अर्थ है? यह केवल बाहरी संकटों से लड़ने तक सीमित है या इसका कोई आंतरिक पक्ष भी है?

उत्तर: बहादुरी का अर्थ केवल बाहरी संकटों से न घबराना ही नहीं है, बल्कि इसका एक महत्वपूर्ण आंतरिक पक्ष भी है। इसका अर्थ अनीति के सामने सिर न झुकाना, अनाचार से समझौता न करना और अपने गुण, कर्म, स्वभाव में प्रवेश करने वाली अवांछनीयताओं (जैसे लोभ, मोह, अहंकार, दुर्व्यसन) से निरंतर संघर्ष करना और उन्हें परास्त करना है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने नौ सद्गुणों को दो वर्गों में क्यों विभाजित किया है: पाँच क्रियापरक और चार भावनापरक? इन दोनों वर्गों में क्या अंतर है?

उत्तर: लेखक ने नौ सद्गुणों को दो वर्गों में इसलिए विभाजित किया है ताकि उनके व्यावहारिक और आंतरिक स्वरूप को स्पष्ट किया जा सके।

◦ **पाँच क्रियापरक (अनुशासन वर्ग):** श्रमशीलता, शिष्टता, मितव्ययिता, सुव्यवस्था और सहकारिता। ये गुण व्यक्ति के व्यवहार और कार्यों में सीधे तौर पर दिखाई देते हैं, इसलिए इन्हें "पञ्चशील" या "धर्म-धारणा" भी कहा गया है।

◦ **चार भावनापरक (श्रद्धा-विश्वास स्तर):** समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी। ये गुण व्यक्ति की आंतरिक मान्यताओं, भावनाओं और अंतःकरण से संबंधित हैं। ये व्यक्ति के चरित्र की नींव बनाते हैं और इन्हें "आध्यात्मिक देव-सम्पदा" भी कहा जा सकता है। दोनों में मुख्य अंतर यह है कि पहला वर्ग बाहरी आचरण से संबंधित है, जबकि दूसरा आंतरिक निष्ठा और विवेक से।

2. **प्रश्न:** "मनुष्य यों स्वतंत्र समझा जाता है, पर वह जिम्मेदारियों के इतने बन्धनों से बँधा हुआ है..." इस कथन के आलोक में 'जिम्मेदारी' सद्गुण के व्यापक अर्थ को समझाइए।

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि मनुष्य की स्वतंत्रता निरंकुश नहीं है, बल्कि वह कई उत्तरदायित्वों से बंधी हुई है। 'जिम्मेदारी' सद्गुण का व्यापक अर्थ सिर्फ अपने परिवार के प्रति कर्तव्यों तक सीमित नहीं है। इसमें ईश्वर द्वारा दिए गए शरीर और मन का दुरुपयोग न करना भी शामिल है। इसके अलावा, व्यक्ति का अपने परिवार, समाज, देश, धर्म और संस्कृति के प्रति भी उत्तरदायित्व है, जिसका तत्परता से निर्वाह करना चाहिए और इनमें किसी भी प्रकार के अनाचार का प्रवेश नहीं होने देना चाहिए। यह सद्गुण व्यक्ति को आत्म-केंद्रित होने से रोककर उसे एक सामाजिक और नैतिक प्राणी बनाता है।

अध्याय 7: नौ सद्गुणों की अभिवृद्धि ही गायत्री-सिद्धि

सरल स्तर के प्रश्न:

1. **प्रश्न:** धर्म-धारणा किसे कहते हैं?

उत्तर: पाँच क्रियापरक और चार भावनापरक, इन नौ गुणों के समूह को ही धर्म-धारणा कहते हैं।

2. **प्रश्न:** गायत्री-मंत्र के नौ शब्द किसकी प्रेरणा देते हैं?

उत्तर: गायत्री-मंत्र के नौ शब्द नौ दिव्य सम्पदाओं (सद्गुणों) को धारण करने की प्रेरणा देते हैं।

3. **प्रश्न:** यज्ञोपवीत के नौ धागे किसका प्रतीक हैं?

उत्तर: यज्ञोपवीत के नौ धागे नौ सद्गुणों का प्रतीक हैं और इन्हें गायत्री की प्रतीक प्रतिमा माना गया है।

4. **प्रश्न:** सच्चे अर्थों में यज्ञोपवीत धारण करने का मर्म क्या है?

उत्तर: मानवीय गरिमा से जुड़े नौ अनुशासन भरे उत्तरदायित्वों को कंधे पर धारण करना ही यज्ञोपवीत धारण करने का वास्तविक मर्म है।

5. **प्रश्न:** गायत्री साधना का सर्वप्रथम परिचय किस रूप में दिखाई देता है?

उत्तर: यदि श्रद्धा-विश्वासपूर्वक सच्चे मन से उपासना की गई हो, तो उसका सर्वप्रथम परिचय नौ सद्गुणों की अभिवृद्धि (बढ़ोतरी) के रूप में परिलक्षित होता है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री मंत्र की ऋद्धि-सिद्धियों को पाने के लिए साधक में क्या योग्यता होनी चाहिए?

उत्तर: गायत्री मंत्र की ऋद्धि-सिद्धियों को पाने के लिए साधक को नौ सद्गुणों को धारण करना आवश्यक है।
निकृष्ट स्तर के चिंतन, चरित्र और व्यवहार वाले व्यक्ति पर दैवी अनुग्रह नहीं बरसता।

2. प्रश्न: ज्ञान और कर्म का युग्म (जोड़ी) क्यों आवश्यक है?

उत्तर: ज्ञान और कर्म का युग्म आवश्यक है क्योंकि दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। जो ज्ञान सीखा या समझा गया है, वह केवल काल्पनिक न रहकर कर्म और विधि-व्यवस्था में भी दिखना चाहिए।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, देवी अनुग्रह की आशा किन लोगों को नहीं करनी चाहिए?

उत्तर: लेखक के अनुसार, जो व्यक्ति निकृष्ट स्तर का चिंतन, चरित्र और व्यवहार अपनाए रहते हैं, उन्हें दैवी अनुग्रह बरसने की आशा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि गन्दगी वाले स्थान पर कोई सुरुचि सम्पन्न व्यक्ति नहीं बैठता।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "गायत्री-सिद्धि" प्राप्त करने के लिए अलौकिक चमत्कारों से पहले किस चरण को पार करना अनिवार्य है?

उत्तर: "गायत्री-सिद्धि" के अलौकिक या अतीन्द्रिय पक्ष (जैसे समृद्धियाँ और विभूतियाँ) पर पहुँचने से पहले साधक को अपने व्यक्तित्व में नौ सद्गुणों की अभिवृद्धि के चरण को पार करना अनिवार्य है। पहले सद्गुणों का विकास होता है, उसके बाद ही अलौकिक उपलब्धियों की आशा की जा सकती है।

2. प्रश्न: गुरु दीक्षा या मंत्र दीक्षा के समय नौ अनुशासनों को हृदयंगम कराने का क्या उद्देश्य है?

उत्तर: गुरु दीक्षा के समय नौ अनुशासनों को हृदयंगम कराने का उद्देश्य यह है कि साधक यह समझे कि गायत्री साधना केवल मंत्र जाप तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवनचर्या में समावेश करने की प्रक्रिया है। यह शिष्य को यह याद दिलाता है कि उसे अपने जीवन के हर पक्ष में इन सद्गुणों को उतारना है, तभी साधना सफल होगी।

अध्याय 8: गायत्री का तत्त्वदर्शन और भौतिक उपलब्धियाँ

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री मंत्र का शीर्ष भाग 'ॐ भूर्भुवः स्वः' का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इसका तात्पर्य है कि आकाश, पाताल और धरातल (तीनों लोकों) में उस दिव्य सत्ता को समाविष्ट अनुभव करना।

2. प्रश्न: गायत्री मंत्र के अनुसार 'सवितुः' का क्या अर्थ है?

उत्तर: 'सवितुः' का अर्थ है तेजस्वी।

3. प्रश्न: 'धीमहि' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर: 'धीमहि' का अर्थ है धारण करना, अर्थात् देवत्व की पक्षधर विभूतियों को धारण करना।

4. प्रश्न: गायत्री उपासना से कौन-सी दो प्रमुख आत्मिक ऋद्धि-सिद्धियाँ मिलती हैं?

उत्तर: गायत्री उपासना से स्वर्ग और मुक्ति (मोक्ष) रूपी दो प्रमुख आत्मिक ऋद्धि-सिद्धियाँ मिलती हैं।

5. प्रश्न: गौतम मुनि को माता गायत्री ने क्या प्रदान किया था?

उत्तर: गौतम मुनि को माता गायत्री ने एक अक्षय पात्र प्रदान किया था, जिससे दुर्भिक्ष-पीड़ित जनता को आहार प्राप्त हुआ था।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: सर्वव्यापी सत्ता की उपस्थिति का अनुभव करने से व्यक्ति के आचरण पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: जिस प्रकार न्यायाधीश और पुलिस की उपस्थिति में कोई अपराध करने का साहस नहीं करता, उसी प्रकार सर्वव्यापी, न्यायकारी सत्ता की उपस्थिति हर समय अनुभव करने से व्यक्ति किसी भी स्तर की अनीति का आचरण नहीं करता।

2. प्रश्न: जीवित रहते हुए मोक्ष की प्राप्ति कैसे संभव है?

उत्तर: मोक्ष का अर्थ है दोष-दुर्गुणों और भव-बन्धनों से मुक्ति। यदि व्यक्ति आत्मशोधन के द्वारा लिप्साओं और कुत्साओं (बुरी इच्छाओं) को हटा दे, तो उसे जीवित रहते हुए भी मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

3. प्रश्न: पौराणिक कथाओं के अनुसार, गायत्री साधना से वशिष्ठ और शृंगी ऋषि को क्या लाभ हुए?

उत्तर: वशिष्ठ के आश्रम में नन्दिनी (गाय) रूपी गायत्री ने राजा विश्वामित्र की पूरी सेना के लिए भोजन की व्यवस्था कर दी थी। दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ सम्पन्न कराने वाले शृंगी ऋषि को गायत्री अनुग्रह से ही चार देवपुत्र (राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न) प्राप्त हुए थे।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: स्वर्ग और मुक्ति को बाहरी लोक या मरणोपरांत स्थिति के बजाय एक आंतरिक अनुभव के रूप में कैसे समझा जा सकता है?

उत्तर: गायत्री का तत्त्वदर्शन बताता है कि सद्बुद्धि और सद्भावना से युक्त व्यक्ति की मनःस्थिति ही स्वर्ग जैसी होती है और वह जहाँ भी रहता है, वहाँ स्वर्गीय वातावरण बना लेता है। इसी प्रकार, मुक्ति का अर्थ मृत्यु के बाद मिलना नहीं, बल्कि जीते-जी कषाय-कल्मषों और दोष-दुर्गुणों से छुटकारा पाना है। इस तरह, स्वर्ग और मुक्ति दोनों ही साधक के आंतरिक और व्यावहारिक जीवन में अनुभव की जाने वाली अवस्थाएँ हैं।

2. प्रश्न: 'ॐ' को विराट ब्रह्मांड और आत्मसत्ता, दोनों में अनुभव करने का क्या दार्शनिक महत्व है?

उत्तर: 'ॐ' को विराट ब्रह्मांड के रूप में अनुभव करने का अर्थ है ईश्वर को सर्वव्यापी मानना, जिससे व्यक्ति अनीति से डरता है। उसे आत्मसत्ता (स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर) में अनुभव करने का अर्थ है अपने भीतर परमात्मा की उपस्थिति को महसूस करना। इसका दार्शनिक महत्व यह है कि साधक अपने तीनों शरीरों को इतना स्वस्थ और निर्मल रखता है कि उनमें परमात्मा की दिव्यता सहज ही प्रकट हो, जैसे खिले गुलाब पर भौरे आ जाते हैं। यह बाहरी और आंतरिक पवित्रता का समन्वय है।

अध्याय 9: चौबीस अक्षरों का शक्तिपुञ्ज

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: देवी भागवत में गायत्री की किन तीन शक्तियों का वर्णन है?

उत्तर: देवी भागवत में गायत्री की तीन शक्तियों का वर्णन है—ब्राह्मी, वैष्णवी और शाम्भवी।

2. प्रश्न: पुराणों में भगवान के कितने अवतारों का वर्णन है, जिनका संबंध गायत्री के अक्षरों से है?

उत्तर: पुराणों में भगवान के चौबीस अवतारों का वर्णन है, जो गायत्री के चौबीस अक्षरों का ही निरूपण हैं।

3. प्रश्न: महर्षि दत्तात्रेय ने कितने गुरुओं से ज्ञान प्राप्त किया था?

उत्तर: महर्षि दत्तात्रेय ने चौबीस गुरुओं से ज्ञान प्राप्त किया था, जो प्रकारान्तर से गायत्री के चौबीस अक्षर ही हैं।

4. प्रश्न: भारतीय धर्म का उद्गम-स्रोत किसे माना गया है?

उत्तर: भारतीय धर्म का एक ही उद्गम-स्रोत है—गायत्री।

5. प्रश्न: वेद, शास्त्र, पुराण आदि का विस्तार किससे हुआ है?

उत्तर: वेद, शास्त्र, पुराण, उपनिषद् आदि का विस्तार गायत्री से ही हुआ है, जैसे पेड़ का तना, टहनियाँ आदि बीज से निकलते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री के नौ शब्दों का संबंध किन शक्तियों से बताया गया है?

उत्तर: गायत्री के नौ शब्द ही महाकाली की नौ प्रतिमाएँ (नवदुर्गा) हैं। साथ ही, इनका संबंध सूक्ष्म-शरीर के नौ शक्ति-केन्द्रों (छह चक्र और तीन ग्रन्थि-समुच्चय) से भी है।

2. प्रश्न: अष्ट सिद्धियों और नौ ऋद्धियों को गायत्री साधना के संदर्भ में कैसे समझा जा सकता है?

उत्तर: अष्ट सिद्धियों और नौ ऋद्धियों को गायत्री के नौ शब्दों से जुड़े नौ शक्ति-केन्द्रों के विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिक्रिया समझा जा सकता है।

3. प्रश्न: लेखक ने गायत्री महाविज्ञान ग्रंथ का उल्लेख क्यों किया है?

उत्तर: लेखक ने इसका उल्लेख यह बताने के लिए किया है कि यदि कोई गायत्री के विषय में अधिक जानना चाहता है तो इस ग्रंथ का अध्ययन कर सकता है। साथ ही, यह भी देख सकता है कि इसके प्रणेता (लेखक) ने सामान्य व्यक्तित्व और साधनों से कितने बड़े-बड़े कार्य संपन्न किए, जिन्हें करने में किसी समर्थ व्यक्ति को पाँच जन्म लग सकते हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. **प्रश्न:** गायत्री के चौबीस अक्षरों को विभिन्न प्रतीकों (जैसे- 24 अवतार, 24 ऋषि, 24 गुरु) के रूप में क्यों प्रस्तुत किया गया है? इसका गूढ़ अर्थ क्या है?

उत्तर: गायत्री के 24 अक्षरों को विभिन्न प्रतीकों के रूप में प्रस्तुत करने का गूढ़ अर्थ यह है कि भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का हर महत्वपूर्ण पक्ष गायत्री के ज्ञान-विज्ञान से ही निकला है। चाहे वह अवतारों का तत्त्वज्ञान हो, ऋषियों की तप-शक्ति हो या गुरुओं का ज्ञान, इन सभी का मूल स्रोत गायत्री ही है। यह दर्शाता है कि गायत्री केवल एक मंत्र नहीं, बल्कि एक समग्र ज्ञान-विज्ञान का शक्तिपुंज है, जिससे अनगिनत दिशाधाराएँ निकलती हैं।

2. **प्रश्न:** परामनोविज्ञान (Parapsychology) द्वारा वर्णित अतीन्द्रिय क्षमताओं का गायत्री मंत्र से क्या संबंध है?

उत्तर: परामनोविज्ञानी जिन अतीन्द्रिय क्षमताओं का वर्णन करते हैं, उन सभी की संगति (तालमेल) गायत्री मंत्र के खण्ड-उपखण्डों के साथ पूरी तरह बैठ जाती है। इसका अर्थ है कि गायत्री साधना द्वारा मनुष्य के भीतर की वे सभी गुप्त और रहस्यमयी शक्तियाँ जागृत की जा सकती हैं, जिन्हें आधुनिक विज्ञान अब खोजना शुरू कर रहा है।

अध्याय 10: शिखा-सूत्र और गायत्री मंत्र सभी के लिए

सरल स्तर के प्रश्न:

1. **प्रश्न:** हिन्दू धर्म के दो प्रमुख प्रतीक चिह्न कौन-से हैं?

उत्तर: शिखा और सूत्र (यज्ञोपवीत) हिन्दू धर्म के दो प्रतीक चिह्न हैं।

2. **प्रश्न:** द्विजत्व की दीक्षा का क्या अर्थ है?

उत्तर: द्विजत्व का अर्थ है जीवनचर्या को आदर्शों के अनुशासन में बाँधना, या नर-पशु से नर-देव के जीवन में प्रवेश करना।

3. **प्रश्न:** सिर पर शिखा रखना किसका प्रतीक है?

उत्तर: सिर पर शिखा रखना गायत्री का ध्वजारोहण करने का प्रतीक है।

4. प्रश्न: मध्यकाल में गायत्री को लेकर क्या विकृतियाँ घुस पड़ीं?

उत्तर: मध्यकाल में यह कहा जाने लगा कि गायत्री केवल ब्राह्मण-वंश के लिए है, स्त्रियाँ इसे धारण न करें और इसे सामूहिक रूप से न बोला जाए।

5. प्रश्न: अगली शताब्दी को क्या कहा गया है और उसमें किसे प्राथमिकता मिलने वाली है?

उत्तर: अगली शताब्दी को 'नारी-शताब्दी' कहा गया है और उसमें नारी-वर्चस्व को प्राथमिकता मिलने जा रही है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, मध्यकाल में गायत्री पर प्रतिबन्ध लगाने का क्या कारण रहा होगा?

उत्तर: लेखक का अनुमान है कि मध्यकाल में जब अनेक नए मत-संप्रदाय उभरे, तो उन्हें अपनी परंपराएं स्थापित करने में अनादि मान्यता वाली गायत्री से बाधा पड़ती होगी। इसलिए उन्होंने गायत्री के प्रति संदेह पैदा किए ताकि लोगों का ध्यान इस शाश्वत परंपरा से हट जाए।

2. प्रश्न: लेखक ने इस तर्क को कैसे काटा है कि "कलियुग में गायत्री फलित नहीं होती"?

उत्तर: लेखक ने युग निर्माण योजना का उदाहरण देते हुए यह तर्क काटा है। उन्होंने बताया कि इसी युग में गायत्री मंत्र के माध्यम से संसार भर के नर-नारियों को जोड़ा गया है और जिन्होंने उपासना के साथ जीवन-साधना को जोड़ा, उन्हें उल्लास भरे परिणाम मिले हैं।

3. प्रश्न: स्त्रियों को गायत्री साधना से वंचित क्यों नहीं किया जा सकता? लेखक ने इसके पक्ष में क्या तर्क दिए हैं?

उत्तर: लेखक ने तर्क दिया है कि गायत्री स्वयं मातृरूपा है, इसलिए माता की गोद में पुत्रियों को बैठने से रोकना अन्याय है। परमात्मा को भी 'त्वमेव माता' कहकर पहले माता का स्थान दिया गया है। साथ ही, अगली शताब्दी नारी-शताब्दी है, जिसमें नारी-वर्चस्व को प्राथमिकता मिलेगी। अतः नारी को गायत्री से वंचित रखना किसी भी तरह से बुद्धिसंगत नहीं हो सकता।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "द्विजत्व अर्थात् जीवनचर्या को आदर्शों के अनुशासन में बाँधना।" इस कथन के आधार पर उपनयन संस्कार के गहरे सामाजिक और व्यक्तिगत महत्व को समझाइए।

उत्तर: इस कथन का गहरा अर्थ है कि उपनयन केवल एक धार्मिक कर्मकांड नहीं है, बल्कि यह एक व्यक्ति के जीवन को पूरी तरह बदलने का संकल्प है। 'द्विजत्व' (दूसरा जन्म) का मतलब है कि व्यक्ति अपने पाशविक (पशु-समान) स्वभाव को त्यागकर एक अनुशासित, आदर्शवादी और देवतुल्य जीवन जीने की प्रतिज्ञा करता है।

शिखा और सूत्र केवल बाहरी चिह्न नहीं, बल्कि इस संकल्प के स्थायी अनुस्मारक (reminder) हैं कि उसे हर क्षण अपने आदर्शों और उत्तरदायित्वों को याद रखना है। यह व्यक्ति और समाज दोनों के उत्थान का आधार है।

2. प्रश्न: गायत्री को "सार्वभौम मान्यता" और "सार्वजनिक" बनाने के पीछे लेखक का क्या दृष्टिकोण है? यह वर्तमान युग के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर: लेखक का दृष्टिकोण है कि गायत्री किसी एक जाति, लिंग या संप्रदाय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण मानवता के लिए है। इसे सार्वजनिक और सार्वभौम बनाने का उद्देश्य संकीर्णता और भेदभाव को मिटाना है, जो मध्यकाल में घुस आए थे। यह वर्तमान युग के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आज पूरा संसार एक केंद्र की ओर बढ़ रहा है (वैश्वीकरण)। ऐसे में, सद्बुद्धि का एक सार्वभौम मंत्र (गायत्री) ही मानवता को जोड़ सकता है और भ्रष्ट चिंतन जैसी वैश्विक समस्याओं का समाधान कर सकता है।

अध्याय 11: यज्ञ और गायत्री एक दूसरे के पूरक

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री का पूरक क्या है?

उत्तर: गायत्री का पूरक यज्ञ है।

2. प्रश्न: भारतीय संस्कृति के जनक-जननी के रूप में किन्हें माना जाता है?

उत्तर: भारतीय संस्कृति के जनक-जननी के रूप में यज्ञ और गायत्री को माना जाता है।

3. प्रश्न: ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में यज्ञ को क्या संज्ञा दी गई है?

उत्तर: ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में यज्ञ को पुरोहित की संज्ञा दी गई है।

4. प्रश्न: ब्रह्मवर्चस् शोध-संस्थान में किस विषय पर शोध चल रहा है?

उत्तर: वहां इस विषय पर शोध चल रहा है कि गायत्री मंत्र और यज्ञ से उत्पन्न ऊर्जा का प्रभाव अध्यात्म तक ही सीमित है या भौतिक क्षेत्र पर भी पड़ता है।

5. प्रश्न: यज्ञ किस प्रकार प्रदूषण का निवारण कर सकता है?

उत्तर: शोध में पाया गया है कि गायत्री मंत्र के साथ जुड़ी यज्ञ-ऊर्जा में प्रदूषण निवारण और वातावरण परिशोधन की क्षमता है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: यज्ञ और गायत्री को प्रकृति और पुरुष क्यों कहा गया है?

उत्तर: इन्हें प्रकृति और पुरुष इसलिए कहा गया है क्योंकि ये दोनों मिलकर ही पूर्ण आधार बनाते हैं, जैसे

प्रकृति और पुरुष के संयोग से सृष्टि क्रियाशील होती है। इन्हें महामाया और परब्रह्म का संयुक्त संयोजन भी माना गया है।

2. प्रश्न: लेखक ने यज्ञ के प्रभाव को समझाने के लिए लाउडस्पीकर का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर: लेखक ने यह समझाने के लिए लाउडस्पीकर का उदाहरण दिया है कि जिस प्रकार एक पतली आवाज लाउडस्पीकर से जुड़कर दूर-दूर तक फैल जाती है, उसी प्रकार गायत्री मंत्र की शब्द-शक्ति यज्ञ-ऊर्जा से जुड़कर व्यापक क्षेत्र को प्रभावित करती है और उसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।

3. प्रश्न: मनुष्य के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक यज्ञ की क्या भूमिका है?

उत्तर: भारतीय संस्कृति में जन्म के समय नामकरण संस्कार से लेकर विवाह में अग्नि की सात परिक्रमाओं और अंत में यज्ञाग्नि की गोद में चिता पर सुलाए जाने तक, जीवन के सभी प्रमुख संस्कारों और पर्व-त्योहारों में यज्ञ की प्रमुखता और अनिवार्यता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: ब्रह्मवर्चस् शोध-संस्थान के शोध-परिणामों ने यज्ञ के पारंपरिक आध्यात्मिक महत्व को किस प्रकार एक नया वैज्ञानिक आयाम दिया है?

उत्तर: पारंपरिक रूप से यज्ञ को एक आध्यात्मिक और धार्मिक कृत्य माना जाता था। लेकिन ब्रह्मवर्चस् शोध-संस्थान के शोध ने यह सिद्ध किया है कि इसका वैज्ञानिक आधार भी है। शोध में पाया गया कि यज्ञ-ऊर्जा केवल मनुष्यों पर ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों और वनस्पतियों के उत्कर्ष में भी सहायक है। यह मनुष्यों के शारीरिक-मानसिक रोगों का निवारण कर सकती है और प्रदूषण को भी समाप्त कर सकती है। इस प्रकार, शोध ने यज्ञ को केवल आस्था का विषय न रखकर, एक वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित प्रक्रिया के रूप में भी स्थापित किया है।

2. प्रश्न: गायत्री यज्ञों को एक स्वतंत्र आंदोलन का रूप क्यों दिया गया है? इसका उद्देश्य केवल धार्मिक अनुष्ठान करना है या कुछ और?

उत्तर: गायत्री यज्ञों को एक स्वतंत्र आंदोलन का रूप केवल धार्मिक अनुष्ठान के लिए नहीं दिया गया है। इसका व्यापक उद्देश्य है सत्प्रवृत्ति-सम्बर्द्धन और दुष्प्रवृत्ति-उन्मूलन। यज्ञ के अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को यह भी समझाया जाता है कि यज्ञ में निहित उत्कृष्टतावादी विचारों को अपनाने से व्यक्तिगत और सामूहिक उन्नति कैसे हो सकती है। इस प्रकार, यह आंदोलन धर्म को समाज सुधार और वैचारिक क्रांति से जोड़ने का एक माध्यम है।

अध्याय 12: एक आध्यात्मिक प्रयोग

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: वर्तमान समय को क्या कहा गया है?

उत्तर: वर्तमान समय को युगसंधि की वेला कहा गया है।

2. प्रश्न: युगसंधि का महापुरश्चरण किस उद्देश्य से किया जा रहा है?

उत्तर: यह महापुरश्चरण बीसवीं सदी की अवांछनीयताओं (बुराइयों) को समाप्त करने और इक्कीसवीं सदी में उज्ज्वल भविष्य व सतयुग की वापसी का वातावरण बनाने के उद्देश्य से किया जा रहा है।

3. प्रश्न: गायत्री मंत्र की शक्ति को बढ़ाने के लिए उसके साथ किसका प्रयोग किया जाता है?

उत्तर: गायत्री मंत्र की शक्ति को बढ़ाने के लिए उसके साथ यज्ञ-ऊर्जा को जोड़ा जाता है।

4. प्रश्न: वर्तमान समय की महंगाई और व्यस्तता को देखते हुए बड़े यज्ञों का कौन-सा छोटा स्वरूप प्रचलित हुआ है?

उत्तर: वर्तमान समय की परिस्थितियों को देखते हुए बड़े यज्ञों का छोटा स्वरूप 'दीपयज्ञ' प्रचलित हुआ है।

5. प्रश्न: युगसंधि की अवधि में शांतिकुंज से कौन-से दो प्रमुख संकल्प उभरे हैं?

उत्तर: पहला संकल्प है—एक लाख सृजन-साधक (सृजनशील साधक) खड़े करना, और दूसरा है—इस प्रयास में एक करोड़ व्यक्तियों को सहभागी बनाना।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने गायत्री मंत्र और यज्ञ के संयुक्त प्रभाव की तुलना लाउडस्पीकर से क्यों की है?

उत्तर: लेखक ने यह तुलना इसलिए की है ताकि यह समझाया जा सके कि जिस प्रकार एक धीमी आवाज लाउडस्पीकर से जुड़कर बहुत बड़े क्षेत्र में फैल जाती है, उसी प्रकार गायत्री मंत्र की शब्द-शक्ति जब यज्ञ की ऊर्जा से जुड़ती है, तो उसका प्रभाव स्थानीय न रहकर बहुत व्यापक हो जाता है और असंख्य लोग उससे लाभान्वित होते हैं।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, समाज में संकटों और विग्रहों का मूल कारण क्या है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, व्यक्ति और समाज के सामने मौजूद सभी संकटों का मूल कारण बुद्धि का भटकाव (भ्रष्ट चिंतन) है। इसी भ्रष्ट चिंतन से दुष्ट आचरण पैदा होता है, जिसके फलस्वरूप चारों ओर अनर्थों की बाढ़ आई हुई है।

3. प्रश्न: "एक और एक ग्यारह बन जाते हैं", इस कहावत का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है?

उत्तर: इस कहावत का प्रयोग पुरुषार्थ (व्यक्तिगत प्रयास) और परमार्थ (ईश्वरीय कृपा/सामूहिक संकल्प) के समन्वय को समझाने के लिए किया गया है। लेखक का कहना है कि जब एक लाख साधकों का संगठित

आध्यात्मिक प्रयोग और एक करोड़ व्यक्तियों का सृजन-पुरुषार्थ आपस में जुड़ेंगे, तो उनका प्रभाव जुड़कर दो गुना नहीं, बल्कि ग्यारह गुना हो जाएगा और नवयुग का अवतरण संभव होगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "विचारक्रांति ही एकमात्र उपचार है।" इस कथन की व्याख्या करें और बताएं कि गायत्री यज्ञ इसमें कैसे सहायक है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि समाज की समस्याओं का सतही समाधान संभव नहीं है; उनका स्थायी हल केवल तभी हो सकता है जब लोगों की सोच को बदला जाए। समस्याओं की जड़ लोगों का भ्रष्ट चिंतन है, इसलिए समाधान के लिए विचार-क्रांति आवश्यक है। गायत्री यज्ञ इसमें दो प्रकार से सहायक है: पहला, गायत्री मंत्र स्वयं सद्बुद्धि की प्रार्थना है, जो चिंतन को परिष्कृत करता है। दूसरा, यज्ञ के अवसर पर एकत्रित जनसमूह को यज्ञ में निहित उत्कृष्टतावादी विचारों को जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है, जिससे यह जनमानस में वैचारिक परिष्कार लाने का एक शक्तिशाली माध्यम बन जाता है।

2. प्रश्न: गायत्री उपासना में सामूहिक साधना पर इतना बल क्यों दिया गया है? क्या कुछ लोगों द्वारा की गई कठोर तपस्या पर्याप्त नहीं है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, कुछ लोगों द्वारा की गई कठोर तपस्या पर्याप्त नहीं है, क्योंकि वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान करने के लिए एक विशाल सामूहिक प्राण-ऊर्जा की आवश्यकता है। जब अधिकाधिक लोग एक ही साधना-पद्धति अपनाते हैं, तो उनकी चेतना के समन्वय से एक ऐसी शक्तिशाली ऊर्जा उत्पन्न होती है, जो व्यापक क्षेत्र को प्रभावित कर सकती है। इसलिए, जन-जन की प्राण-चेतना का समन्वय आवश्यक है ताकि सामूहिक ऊर्जा का विस्तार हो सके और नवयुग के अवतरण जैसे बड़े लक्ष्यों को पूरा किया जा सके।

अध्याय 13: आत्मशोधन, साधना का एक अनिवार्य चरण

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: उपासना या पूजा-कर्मकांड से पहले साधक के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर: उपासना से पहले साधक के लिए अपनी निजी जीवनचर्या को उच्चकोटि का बनाना, अर्थात् आत्मशोधन करना आवश्यक है।

2. प्रश्न: महर्षि पतंजलि ने राजयोग में साधना से पहले किन चीजों को प्रमुखता दी है?

उत्तर: महर्षि पतंजलि ने आसन, प्राणायाम आदि साधनाओं से पहले यम और नियमों के पालन को प्रमुखता दी है।

3. प्रश्न: लेखक ने परिष्कृत जीवन और पूजा-पाठ की तुलना किससे की है?

उत्तर: लेखक ने परिष्कृत जीवन की तुलना स्वस्थ शरीर से और पूजा-पाठ की तुलना शृंगार से की है।

4. प्रश्न: रावण, मारीच आदि की कठोर शिव-साधना का परिणाम अनर्थकारी क्यों हुआ?

उत्तर: उनकी साधना इसलिए अनर्थकारी हुई क्योंकि उन्होंने आत्मशोधन और व्यक्तित्व के परिष्कार पर ध्यान नहीं दिया, केवल कर्मकांड पर ही ध्यान केंद्रित किया।

5. प्रश्न: साधना के निष्फल होने पर लोग क्या दोष देते हैं?

उत्तर: जब सिद्धांतविहीन प्रक्रिया (बिना आत्मशोधन के कर्मकांड) का कोई परिणाम नहीं निकलता, तो लोग आध्यात्मिकता और उपासना पद्धति पर ही दोष लगाने लगते हैं और नास्तिकों जैसी बातें करते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने तथाकथित गुरुओं और शिष्यों को 'धूर्त' और 'मूर्ख' क्यों कहा है?

उत्तर: लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि ये गुरु और शिष्य दोनों ही अध्यात्म के मूल सिद्धांत (आत्मशोधन) को अनदेखा करते हैं। गुरु केवल कुछ क्रिया-प्रक्रियाओं को ही पूर्ण साधना बताकर शिष्यों को भ्रमित करते हैं (इसलिए धूर्त), और शिष्य भी बिना अपने व्यक्तित्व को सुधारे, केवल कर्मकांड से सिद्धि पाने की अपेक्षा करते हैं (इसलिए मूर्ख)।

2. प्रश्न: "उलटा नाम जपने वालों को भी ब्रह्म समान बन जाने के तथ्य सामने आते देखे गये हैं।" इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर: इस कथन का आशय यह है कि यदि जीवन-साधना (व्यक्तित्व का परिष्कार और आत्मशोधन) कर ली गई हो, तो पूजा-पाठ के बाहरी विधि-विधान का महत्व गौण हो जाता है। एक पवित्र और निर्मल हृदय वाला व्यक्ति यदि उपासना की विधि में कोई त्रुटि भी कर दे, तो भी उसे ईश्वर की कृपा प्राप्त हो जाती है, क्योंकि अध्यात्म में बाहरी कर्मकांड से अधिक आंतरिक पवित्रता का मूल्य है।

3. प्रश्न: अध्यात्म को 'जादूगरी-बाजीगरी' क्यों नहीं समझना चाहिए?

उत्तर: अध्यात्म को जादूगरी-बाजीगरी इसलिए नहीं समझना चाहिए क्योंकि यह कोई चमत्कारिक टोटका नहीं है जिससे तुरंत फल मिल जाए। इसके पीछे व्यक्तित्व को उभारने, निखारने और उत्कृष्ट बनाने की अनिवार्य शर्त जुड़ी हुई है, जिसे पहले पूरा करना पड़ता है। यह एक क्रमिक विकास की प्रक्रिया है, कोई जादुई करतब नहीं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "स्वस्थता के रहते यदि शृंगार भी सजा लिया जाये, तो हर्ज नहीं, पर अकेले शृंगार सज्जा बनाकर कोई कृषकाय जराजीर्ण, रोगग्रस्त मात्र उपहासास्पद ही बन सकता है।" इस उपमा के माध्यम से लेखक अध्यात्म के किस गहरे सिद्धांत को समझाना चाहते हैं?

उत्तर: इस उपमा के माध्यम से लेखक अध्यात्म के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत को समझा रहे हैं: **व्यक्तित्व का परिष्कार (स्वस्थता) साधना का आधार है और कर्मकांड (शृंगार) केवल उसका पूरक है।** जैसे एक बीमार शरीर पर मेकअप हास्यास्पद लगता है, उसी प्रकार एक दुष्ट, अनैतिक और अपरिष्कृत व्यक्ति द्वारा किया गया पूजा-पाठ व्यर्थ और दिखावा मात्र है। साधना की सफलता के लिए पहले आत्मशोधन द्वारा अपने गुण, कर्म और स्वभाव को स्वस्थ बनाना अनिवार्य है। इसके बिना की गई कोई भी उपासना निष्फल ही रहेगी।

2. प्रश्न: आज के समय में अधिकांश लोगों की साधना निष्फल क्यों हो जाती है, और इसके क्या दूरगामी परिणाम होते हैं?

उत्तर: आज के समय में अधिकांश साधनाएँ इसलिए निष्फल हो जाती हैं क्योंकि लोग पहले चरण (आत्मशोधन और जीवन-साधना) को छोड़कर सीधे अंतिम चरण (कर्मकांड से सिद्धि की अपेक्षा) पर पहुँचना चाहते हैं। वे वर्णमाला सीखे बिना एम.ए. की डिग्री चाहते हैं। इसके दूरगामी परिणाम बहुत घातक होते हैं। जब उनकी मनोकामनाएँ पूरी नहीं होतीं, तो वे निराश होकर पूरी अध्यात्म विद्या और उपासना पद्धति को ही व्यर्थ और पाखंड बताने लगते हैं। इस प्रकार, उनकी अपनी गलती के कारण समाज में नास्तिकता और अध्यात्म के प्रति अविश्वास फैलता है।

अध्याय 14: उपासना—विधान और तत्त्वदर्शन

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री का देवता कौन है और उसका ध्यान कैसे किया जाता है?

उत्तर: गायत्री का देवता 'सविता' है, जो प्रातःकाल का उदय होता हुआ स्वर्णिम सूर्य है। जप के साथ इसी का ध्यान किया जाता है।

2. प्रश्न: गायत्री उपासना में जलपात्र और दीपक क्यों रखे जाते हैं?

उत्तर: जलपात्र शीतलता और नम्रता का प्रतीक है, जबकि दीपक या अग्नि तेजस्विता और साहसिकता का प्रतीक है।

3. प्रश्न: पूजा में अक्षत (चावल) चढ़ाने का क्या symbol है?

उत्तर: अक्षत चढ़ाना इस बात का प्रतीक है कि हम अपनी कमाई का एक अंश भगवान के (अर्थात् सत्कर्मों के) लिए अर्पित करेंगे।

4. प्रश्न: गायत्री के सवालक्ष अनुष्ठान में प्रतिदिन कितनी माला करनी पड़ती है और यह कितने दिन में पूरा होता है?

उत्तर: सवालक्ष अनुष्ठान में प्रतिदिन 33 मालाएँ करनी पड़ती हैं और यह 40 दिन में पूरा होता है।

5. प्रश्न: गायत्री साधना से साधक में कौन-सी तीन विशेषताएँ प्रस्फुटित होती हैं?

उत्तर: गायत्री साधना से साधक में ओजस् (शारीरिक समर्थता), तेजस् (मानसिक प्रखरता) और वर्चस् (आत्मिक पवित्रता) की विशेषताएँ प्रस्फुटित होती हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: यदि पूजा के लिए उपचार सामग्री (धूप, दीप, पुष्प आदि) उपलब्ध न हो तो क्या करना चाहिए?

उत्तर: यदि उपचार सामग्री उपलब्ध न हो, तो सब कुछ ध्यान के माध्यम से मानसिक स्तर पर किया जा सकता है। जिस प्रकार बड़े यज्ञ को छोटे दीपयज्ञ में समेटा जा सकता है, उसी प्रकार भौतिक पूजा को भावना स्तर पर मानसिक कल्पना के आधार पर भी किया जा सकता है।

2. प्रश्न: पञ्चोपचार की पूजा सामग्री भगवान को क्यों समर्पित की जाती है? क्या भगवान को इनकी आवश्यकता है?

उत्तर: भगवान को इन वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है। यह सामग्री इसलिए समर्पित की जाती है ताकि साधक उन गुणों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प ले सके, जिनके ये प्रतीक हैं। जैसे दीपक का अर्थ है स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देना। यह साधक की भक्ति-भावना और सद्गुणों को अपनाने की प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

3. प्रश्न: क्या गायत्री उपासना साधक को कोई हानि पहुँचा सकती है?

उत्तर: नहीं, लेखक इस भ्रांति को स्पष्ट रूप से मिटाते हुए कहते हैं कि गायत्री-साधना कभी भी किसी साधक को किसी भी प्रकार की कोई हानि नहीं पहुँचाती, क्योंकि यह मूलतः सद्बुद्धि धारण करने की साधना है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: गायत्री के ध्यान की प्रक्रिया "यह मान्यता मात्र भावना बनकर ही नहीं रह जाती, वरन् अपनी फलित होने वाली प्रक्रिया का भी परिचय देती है," का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इसका गहरा तात्पर्य यह है कि गायत्री का ध्यान केवल एक कोरी कल्पना नहीं है, बल्कि यह एक मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया है जो वास्तविक परिणाम देती है। जब साधक यह भावना करता है कि सूर्य की किरणें उसके स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर में प्रवेश कर ओजस्, तेजस् और वर्चस् बढ़ा रही हैं, तो यह गहन आत्मविश्वास और सकारात्मक ऊर्जा (auto-suggestion) साधक के अवचेतन मन पर गहरा

प्रभाव डालती है। समय के साथ, यह मानसिक भावना वास्तविक रूप में साधक के व्यक्तित्व में शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्तर पर दिखाई देने लगती है।

2. प्रश्न: उपासना में "सर्वतोमुखी शुद्धता" का क्या महत्व है? यह केवल बाहरी स्वच्छता तक सीमित है या इसका कोई गहरा अर्थ भी है?

उत्तर: उपासना में "सर्वतोमुखी शुद्धता" का महत्व बहुत गहरा है। यह केवल बाहरी स्वच्छता (शरीर, स्थान, उपकरण) तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है—**आंतरिक शुद्धता**। इसमें मन की शुद्धता (बुरे विचारों से रहित), भाव की शुद्धता (ईर्ष्या, द्वेष से रहित) और लक्ष्य की शुद्धता (स्वार्थरहित परमार्थ का भाव) भी शामिल है। जब बाहरी और आंतरिक, दोनों प्रकार की शुद्धता का समन्वय होता है, तभी उपासना के लिए उपयुक्त आध्यात्मिक वातावरण बनता है और साधना सफल होती है।

अध्याय 15: युगतीर्थ में साधना का विशेष महत्त्व

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: शांतिकुंज को युगतीर्थ की उपमा क्यों दी जाती है?

उत्तर: शांतिकुंज ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की तपस्थली है, गंगा के तट पर स्थित है, और यहाँ करोड़ों गायत्री मंत्रों के जप-अनुष्ठान हो चुके हैं। इन कारणों से इसे एक सिद्धाश्रम और युगतीर्थ की उपमा दी जाती है।

2. प्रश्न: शांतिकुंज में साधना करने वाले साधक को क्या लाभ मिलता है?

उत्तर: यहाँ साधना करने से साधक की मनोकामनाएं पूरी होती हैं और उसे मनोबल-आत्मबल भी प्राप्त होता है।

3. प्रश्न: व्यस्त साधकों के लिए शांतिकुंज में कितने दिन के अनुष्ठान की व्यवस्था है?

उत्तर: अत्यधिक व्यस्त साधकों के लिए पाँच दिन के संक्षिप्त अनुष्ठान की व्यवस्था है।

4. प्रश्न: शांतिकुंज में नौ दिन के सत्र में भाग लेने का अतिरिक्त लाभ क्या है?

उत्तर: नौ दिन के सत्र में साधना के साथ-साथ सत्संग और जीवन-कला का शिक्षण भी प्राप्त होता है।

5. प्रश्न: किन लोगों को शांतिकुंज के साधना सत्रों में प्रवेश नहीं मिलता है?

उत्तर: अशिक्षितों, अत्यधिक वृद्ध (जराजीर्णों) और संक्रामक रोग से ग्रस्त लोगों को प्रवेश नहीं मिलता।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: शांतिकुंज में सवा लक्ष का अनुष्ठान करने की सलाह क्यों नहीं दी जाती है?

उत्तर: सवा लक्ष का अनुष्ठान चालीस दिन का होता है। शांतिकुंज में इतनी लंबी अवधि तक रहने की सुविधा दे पाना कठिन है, इसलिए साधकों को यह अनुष्ठान अपने घर पर ही करने की सलाह दी जाती है।

2. प्रश्न: साधना सत्रों के लिए महिलाओं के साथ छोटे बच्चों को लाने की अनुमति क्यों नहीं है?

उत्तर: क्योंकि साधना, प्रशिक्षण और परामर्श की दिनचर्या बहुत व्यस्त होती है, जिसके बीच छोटे बालकों की देखभाल ठीक से नहीं हो पाती। इससे साधक की साधना और आश्रम की अनुशासित व्यवस्था दोनों में गड़बड़ी आ सकती है।

3. प्रश्न: शांतिकुंज आकर साधना करने को "सोने और सुगन्ध के सम्मिश्रण" जैसा क्यों कहा गया है?

उत्तर: इसे ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि साधक की अपनी साधना (सोना) जब शांतिकुंज जैसे सिद्ध और संस्कारित तपस्थली के वातावरण (सुगंध) से जुड़ जाती है, तो उसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। व्यक्तिगत प्रयास के साथ स्थान की ऊर्जा का भी लाभ मिलता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: शांतिकुंज में साधना करने से युगसंधि महापुरश्चरण की प्रक्रिया अनायास कैसे जुड़ जाती है?

उत्तर: शांतिकुंज युगसंधि महापुरश्चरण का केंद्र है, जहाँ से इस अभियान का संचालन हो रहा है। वहाँ का पूरा वातावरण, नित्य होने वाले जप-यज्ञ और सामूहिक संकल्प, सभी इसी महापुरश्चरण की ऊर्जा से ओत-प्रोत हैं। इसलिए, जब कोई साधक वहाँ व्यक्तिगत साधना करता है, तो वह अनायास ही उस विराट सामूहिक ऊर्जा और संकल्प का हिस्सा बन जाता है। उसकी व्यक्तिगत साधना की ऊर्जा उस महायज्ञ में आहुति की तरह जुड़ जाती है, और उसे उस महायज्ञ की ऊर्जा का लाभ भी मिलता है।

2. प्रश्न: "प्रतिभा परिष्कार का वह प्रयोजन भी पूरा होता है, जिसके माध्यम से भावी शताब्दी में महामानवों के स्तर की भूमिका निबाहने का सुयोग बन पड़ता है।" इस कथन का शांतिकुंज की साधना के संदर्भ में क्या अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि शांतिकुंज में साधना का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत मनोकामना पूर्ति या आत्मिक शांति तक सीमित नहीं है। इसका एक बड़ा लक्ष्य है—साधकों की प्रतिभा का परिष्कार करके उन्हें भविष्य के लिए तैयार करना। यहाँ की साधना और प्रशिक्षण व्यक्ति के भीतर की सोई हुई क्षमताओं को जगाकर उसे इस योग्य बनाता है कि वह आने वाली सदी में समाज का नेतृत्व कर सके और एक महामानव के स्तर की (अर्थात् समाज-हितैषी और सृजनशील) भूमिका निभा सके। यह युगशक्ति गायत्री का मिशन को दिया गया एक आश्वासन है।

अध्याय 16: संस्कारों की सुलभ व्यवस्था

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: शांतिकुंज में कौन-से दो प्रमुख संस्कार कराने की सुव्यवस्था है?

उत्तर: शांतिकुंज में यज्ञोपवीत संस्कार और विवाह संस्कार कराने की सुव्यवस्था है।

2. प्रश्न: खर्चीली शादियों के क्या दुष्परिणाम होते हैं?

उत्तर: खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं।

3. प्रश्न: शांतिकुंज में यज्ञोपवीत और विवाह संस्कार कैसे होते हैं?

उत्तर: शांतिकुंज में ये संस्कार बिना किसी आडम्बर और खर्च के होते हैं।

4. प्रश्न: लोग शांतिकुंज में संस्कार कराना क्यों पसंद करते हैं?

उत्तर: क्योंकि यहाँ संस्कार बिना खर्च के, सादगी से और दैवीय वातावरण में संपन्न होते हैं, जो स्थानीय स्तर पर सामाजिक विरोध के कारण संभव नहीं हो पाता।

5. प्रश्न: यज्ञोपवीत संस्कार के साथ कौन-सी अवधारणा जुड़ी है?

उत्तर: यज्ञोपवीत धारण के साथ गायत्री मंत्र की अवधारणा जुड़ी हुई है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: शांतिकुंज में आदर्शवादी विवाहों को प्रोत्साहन क्यों दिया जाता है?

उत्तर: क्योंकि समाज में विवाह आडम्बरपूर्ण और खर्चीले हो गए हैं, जिससे परिवार कर्ज में डूब जाते हैं और बेईमानी की ओर बढ़ते हैं। शांतिकुंज दहेज और जेवर रहित आदर्श विवाहों को प्रोत्साहित करता है ताकि इन सामाजिक कुरीतियों को समाप्त किया जा सके और विवाह को एक पवित्र संस्कार के रूप में पुनः स्थापित किया जा सके।

2. प्रश्न: शांतिकुंज को संस्कार संपन्न कराने के लिए उपयुक्त स्थान क्यों माना जाता है?

उत्तर: शांतिकुंज को उपयुक्त स्थान माना जाता है क्योंकि यह गायत्री माता के संस्कारों से अनुप्राणित भूमि है और यहाँ की नौ कुण्डीय यज्ञशाला का दैवी प्रभाव संस्कारों के महत्व को और बढ़ा देता है।

कठिनतम स्तर का प्रश्न:

1. प्रश्न: संस्कारों को आडम्बर और खर्चीले रिवाजों से मुक्त कराकर शांतिकुंज किस बड़े सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की नींव रख रहा है?

उत्तर: संस्कारों को आडम्बर से मुक्त कराकर शांतिकुंज एक बहुत बड़े सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की नींव रख रहा है। यह परिवर्तन है—संस्कारों के बाहरी स्वरूप के बजाय उनके आंतरिक तत्त्वदर्शन और उद्देश्य को महत्व देना। खर्चीले रिवाज संस्कारों को एक सामाजिक बोझ बना देते हैं, जबकि शांतिकुंज उन्हें सरल और

सुलभ बनाकर यह संदेश देता है कि संस्कारों का असली उद्देश्य व्यक्ति के जीवन को दिशा देना और उसे आदर्शों से जोड़ना है, न कि अपनी संपत्ति का प्रदर्शन करना। यह कदम समाज को दरिद्रता, कर्ज और बेईमानी जैसी बुराइयों से बचाता है और धर्म को उसके सच्चे, सात्विक स्वरूप में पुनः स्थापित करता है।

शब्द/शब्द समुच्चय – परिभाषा

- **गायत्री महामंत्र** - चौबीस अक्षरों का यह महामंत्र भारतीय संस्कृति के वाङ्मय का नाभिक (केंद्र) और संसार का सबसे छोटा एवं समग्र धर्मशास्त्र है।
- **गायत्री** - यह तत्त्वज्ञान से संबंधित पक्ष है, जिससे विचारणा, भाव-संवेदना, आस्था, आकांक्षा और क्रियाशीलता जैसी विभूतियाँ प्रकट होती हैं।
- **सावित्री** - यह भौतिक प्रयोजनों और पदार्थ-संरचना से संबंधित पक्ष है।
- **भौतिक विज्ञान** - यह भौतिक पदार्थों को परिष्कृत करने एवं उनका सदुपयोग कर सकने वाली सावित्री विद्या का ही एक पक्ष है।
- **गायत्री का तत्त्वज्ञान** - यह वह ज्ञान है जो उत्कृष्टता, आदर्शवादिता, मर्यादा एवं कर्तव्यपरायणता जैसी मानवीय गरिमा को बनाए रखने वाली आस्थाओं को अपनाने की प्रेरणा देता है।
- **त्रिपदा गायत्री** - इसका अर्थ है कि गायत्री के तीन चरण या तीन दिशाधाराएँ हैं।
- **सविता के भर्ग का वरण (पहला चरण)** - जीवन में ऊर्जा, आभा, परिष्कृत प्रतिभा और शौर्य-साहस का बाहुल्य होना।
- **देवत्व का वरण (दूसरा चरण)** - शालीनता को अपनाते हुए उदारचेता बने रहना और लेने की अपेक्षा देने की प्रवृत्ति का पोषण करना।
- **धियो यो नः प्रचोदयात् (तीसरा चरण)** - केवल अपनी ही नहीं, बल्कि सारे समूह, समाज व संसार में सदबुद्धि की प्रेरणा उभारना।
- **आध्यात्मिक त्रिवेणी-संगम** - आदर्शवादी साहसिकता, देवत्व की पक्षधर शालीनता एवं आदर्शवादिता को प्रमुखता देने वाली महाप्रज्ञा का संगम।
- **ओजस्, तेजस्, वर्चस्** - गायत्री साधना से प्राप्त होने वाली शारीरिक बलिष्ठता (ओजस्), मानसिक प्रखरता (तेजस्) और आत्मिक दिव्यता (वर्चस्)।
- **द्विजत्व** - मानवीय गरिमा के अनुरूप जीवन को परिष्कृत करने की अवधारणा, अर्थात् जीवनचर्या को आदर्शों के अनुशासन में बाँधना।
- **यज्ञोपवीत धारण करना** - जीवनचर्या को देव मंदिर बना लेना; मानवीय गरिमा से जुड़े नौ अनुशासन भरे उत्तरदायित्वों को कंधे पर धारण करना।
- **पञ्चशील** - व्यवहार में लाए जाने वाले पाँच गुण: श्रमशीलता, शिष्टता, मितव्ययिता, सुव्यवस्था और उदार सहकारिता।

- धर्म-धारणा - पाँच क्रियापरक (पञ्चशील) और चार भावनापरक (समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी) गुणों का समूह।
- 'ॐ भूर्भुवः स्वः' (गायत्री का शीर्ष भाग) - आकाश, पाताल और धरातल, इन तीनों लोकों में उस दिव्य सत्ता को समाविष्ट अनुभव करना।
- सवितुः - तेजस्वी।
- धीमहि - धारण करना (देवत्व की पक्षधर विभूतियों को)।
- मोक्ष - कषाय-कल्मषों, दोष-दुर्गुणों और भव-बन्धनों से मुक्ति।
- शिखा (सिर पर) - गायत्री का ध्वजारोहण करने का प्रतीक।
- सूत्र (यज्ञोपवीत) धारण - नर-पशु से नर-देव के जीवन में प्रवेश करना।
- गायत्री का पूरक - यज्ञ।
- युगसंधि की वेला - वर्तमान समय, जो बीसवीं सदी की अवांछनीयताओं का समापन और इक्कीसवीं सदी में उज्ज्वल भविष्य का आगमन करने वाली अवधि है।
- विचारक्रांति - जनमानस को परिष्कृत करना, जो समाज के सभी संकटों का एकमात्र उपचार है।
- आत्मशोधन - उपासना से पहले साधक द्वारा अपनी निजी जीवनचर्या को उच्चकोटि का बनाना।
- सविता - प्रातःकाल का उदय होता हुआ स्वर्णिम सूर्य, जो गायत्री का देवता है।
- अक्षत (पूजा में) - अपनी कमाई का एक अंश भगवान (सत्कर्मों) के लिए अर्पित करने का प्रतीक।
- दीपक (पूजा में) - स्वयं जलकर दूसरों के लिए प्रकाश उत्पन्न करने का प्रतीक।
- जल (पूजा में) - शीतलता, शान्ति और नम्रता का प्रतीक।
- युगतीर्थ - शांतिकुंज को दी गई उपमा, जो एक संस्कारित और सिद्ध तपस्थली है।